International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मध्यकालीन कश्मीर में महिला सन्त लल्लेश्वरी

डा0 जयवीर प्रताप शर्मा
शोध निर्देशक
हिमालयन विश्वविद्यालय, ईटानगर

मणि गुप्ता
शोधार्थी (इतिहास)
हिमालयन विश्वविद्यालय, ईटानगर

सारांश :

मध्यकालीन कश्मीर में प्रतिभाशाली, आत्मज्ञानी लल्लेश्वरी अपने स्वरचित मधुर गीतों के द्वारा समाज को ब्रह्म की सर्वव्याकता, अद्वैतवाद, ईश्वरभक्ति और कर्मयोग का संदेश दिया गया। उसके दार्शनिक सिद्धान्तों के आधार पर कश्मीर में 'रिषी संप्रदाय' का उदय किया। कश्मीरी जनता लल्लेश्वरी और शेख नुरूद्दीन को इस संप्रदाय के प्रवर्तकों के रूप में आज भी सम्मानित करती है और इन दोनों के प्रति प्रणम्य भाव रखती है। कश्मीर के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर लल्लेश्वरी द्वारा प्रतिपादित 'रिषी संप्रदाय' का विलक्षण प्रभाव आज भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। इसका महत्वपूर्ण कारण यह है कि 'रिषी संप्रदाय तत्कालीन सूफी संप्रदाय से अधिक उदार था। हिन्दू मुस्लिम एकता, परस्पर सौहार्दभाव, ईष्वर के प्रति प्रेम भावना, आध्यात्मिकता से परिपूर्ण जीवन तथा कर्मकाण्ड और इष्टसिद्धियों का निषेध आदि इस संप्रदाय की विशेषताएं थीं, जिनके कारण 'रिषी संप्रदाय' बहुत लोकप्रिय बन गया। लल्लेश्वरी ने इस संप्रदाय के प्रसार में अद्भुत योगदान दिया। उसके प्रवचनों और गीतों में अभिव्यक्त आध्यात्मिक विचार 'रिषी' संप्रदाय के मूलतत्व बन गये।

कुंजी शब्द : लल्ल, पद्मावती, रिषी संप्रदाय, लल्ल का तालाब

प्रस्तावना :

मध्यकालीन कश्मीर की सुविख्यात सन्त लल्लेश्वरी (लल, ललद्यद, जन्म नाम पद्मावती) का नाम बड़े पूज्य भाव से कश्मीर में लिया जाता है। इनका जन्म विवादों के होते

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हुए भी अधिकांश द्वारा मान्य है कि सन् 1335 ई0 पांपोर (पामापुर) के निकट सिमपुरा गांव में एक ब्राह्मण कुल में हुआ था। 12 वर्ष की आयु में इनका विवाह सोन पण्डित से कर दिया गया। किन्तु लल्लेश्वरी का मन बचपन से ही सांसारिकता में न होकर ईष्वर की ओर लगा था। विवाह के उपरान्त ससुराल का जीवन अत्यन्त कष्टों–क्लेशों से भरा रहा। सौतेली सास ने बड़े अत्याचार ढायें।

घर के सभी कष्टप्रद काम करने के बाद भी उन्हें भूखा रखा जाता था। भूख प्यास से तड़पती लल्लेश्वरी पर किसी को दया नहीं आती थी। घर में जब कभी मीठे पकवान बनते थे तब उसके सामने कंकर मिश्रित चावल परोसे जाते थे।

एक बार सिद्धमोल के साथ लल्लेश्वरी के घर पर एक विषय पर चर्चा हुई। जिसमें सोन पण्डित भी सम्मिलित हुए कि सभी प्रकाशों में सर्वश्रेष्ठ प्रकाश कौन सा है? इसी भांति सभी तीर्थों तथा सभी परिजनों एवं सभी वस्तुओं में सर्वश्रेष्ठ किन्हें माना जाय। सर्वप्रथम सोन पण्डित ने सूर्य प्रकाश को तथा गुरु सिद्धमोल ने नेत्र–प्रकाश को सर्वेश्रेष्ठ बताया, किन्तु लल्लेश्वरी ने आत्म प्रकाष को सर्वश्रेष्ठ बताया, जिज्ञासा को सर्वश्रेष्ठ तीर्थ, ईष्वर को सर्वश्रेष्ठ परिजन तथा ईष–भय को सबसे सुखद वस्तु बताया। इसे सुनकर पति एवं गुरु दोनों हतप्रभु रह गये। शेष प्रश्नों के उत्तर भी दोनों से अति श्रेष्ठ व अलग थे। इससे लल्लेश्वरी के चिन्तन–दर्शन की ऊँचाईयों का पता चलता है।

एक बार की घटना है कि सास द्वारा भड़काये गये सोन पण्डित लाठी लेकर पानी भरने के घाट पर ही जा पहुंचा कि लल्लेश्वरी जल भरने जाती है तो अनावश्यक बातों में समय अधिक लगाती है। सोन पण्डित उधर गया, देखा तो लल्लेश्वरी पानी का भरा घड़ा सिर पर रखे सामने से आ रही थी। गुस्से में भरे सोन पण्डित ने घड़े पर जोर से लाठी मारी। घड़ा तो फूट गया। मिट्टी का था। किन्तु कहते हैं, पानी ज्यों का त्यों लल्लेश्वरी के सिर पर टिका रहा। घर आकर उसने इस पानी से बर्तन आदि धोये और शेष बचा जल खिड़की से बाहर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

फेंक दिया। थोड़े ही दिनों बाद उस स्थान पर एक तालाब बन गया। वह तालाब बाद में 'ललत्राग' (लल का तालाब) नाम से जाना जाने लगा।

अन्ततः लल्लेश्वरी की अपार सहनशीलता का अंत हो गया। उसमें ससुरालवालों के प्रति विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी और उसने सदा के लिए घर, परिवार और समाज को छोड़ दिया और शैलराज हिमालय को अपना पिता मानकर वह उसकी छाया में जीवन बिताने लगी। ऊँचे चिनार, देवदार और सूचीपर्णी वृक्ष अब उसके मित्र बन गए थे। आकाष को स्पर्ष करने वाले हिमाच्छादित शिखरों के सान्निध्य में रहने वाली तथा हरे–भरे वन प्रदेशों में विचरण करने वाली लल्ला उन दिनों अपने अन्तर्यामी की खोज में डूब गयी थी।

कश्मीर की सुरम्य घाटी में विचरण करते समय एक दिन लल्ला को अचानक अपने गुरू आचार्य सिद्ध श्रीकण्ठ का स्मरण हो गया और वह तुरन्त उनके पास चली गयी। उस महान शैवाचार्य के मार्गदर्शन में कठोर योगसाधना की। उनके उपदेश और उनसे प्राप्त यौगिक षिक्षा के कारण लल्लेश्वरी महान शैव योगिनी बन गई।

विरागिनी लल्लेश्वरी अपने दार्शनिक सिद्धान्तों के छोटे–छोटे गीतों द्वारा अभिव्यक्त करती थी। पुरानी कश्मीरी भाषा में उसके द्वारा रचे इन गीतों को 'वारव' कहा जाता है। अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न कवयित्री लल्ला के गीतों को सुनकर जनता मुग्ध हो जाती थी। ईष्वर के प्रति प्रेमभाव से भरे गीतों को गाने वाली लल्ला को कश्मीर की वादियाँ अत्यन्त प्रिय थी। लल्ला का कोई एक ठौर ठिकाना नहीं था। कभी गाँवों में, कभी फूलों से भरे उद्यानों में तो कभी वन प्रदेषों में सर्वत्र भ्रमणशील लल्लेश्वरी के गीतों की गूंज सुनाई देती थी। लल्ला कभी कलकल बहते झरनों से बातें करती तो कभी चहचहातें पक्षियों तथा रंगबिरंगी तितलियों को अपने गीत सुनाती थी। हिमालय की बर्फीली चट्टानों के पास तथा ऊँचे घने वृक्षों की छाया में या झील के पास गीत गाती हुई अकेली लल्ला सबको मोह लेती थी। उसको न समाज की परवाह थी और न वस्त्रों की चिंता थी। अपने आपको परमतत्व के प्रति पूर्णतः समर्पित कर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दिया था। चराचर सृष्टि के साथ उसकी मित्रता थी। लल्ला प्रकृति का अभिन्न अंग बन गई थी।

लल्लेश्वरी के **'वारव'** अर्थात् मधुर गीत उसके पवित्र आचरण और आध्यात्मिक विचारों के कारण सबको प्रभावित करते थे। अद्‌भुत कल्पना विलास मार्मिक शब्दयोजना तथा अलंकारों की सुषमा के कारण वे अधिक चमक उठते थे। उसके गीतों में अनुभूति और अभिव्यक्ति का अनूठा सौंदर्य झलकता है। इसलिए उसकी रचनाएँ 'लल्लावाक्यानि' नाम से आज भी प्रंशंसित है।

समाज में सर्वत्र प्रेमपूर्ण सहजीवन हो, यही लल्लेश्वरी को अपेक्षित था। इसलिए वह चाहती थी कि सभी लोग चालाकी, असत्य और धोखेबाजी छोड़ दे और सब में ईश्वर है इस बात पर विश्वास करें। उसके मत से योगसाधना के द्वारा ईश्वर के दर्शन नहीं होते पर उससे जगत् मिथ्या है, असत्य है, भ्रम मात्र है इतना तो अवश्य समझ में आता है। उसका विश्वास है कि जब हमारा मन शुद्ध एवं निर्मल बन जाता है, हमारे सारे दुर्गुणों का, अमंगल वृत्तियों का नाश हो जाता है तब हमें ईश्वर के अर्थात् अन्तर्यामी के दर्शन हो जाते है। हम उस परमतत्व के साथ अर्थात् शिव के साथ एकरूप हो जाते है। जीव और शिव का भेद नष्ट हो जाता है और यह स्थिति लल्ला के मत से अत्यन्त आनन्दमयी होती है।

उनके मत से उस अवस्था में हम इस सत्य से अवगत होते है कि –

''राज्य नहीं वहाँ शिव का, नहीं उसकी शक्ति का।
सपने जैसा आभासित सब।।
अभी है तो कभी नहीं।
दृश्य जगत् केवल मायाजाल।।

लल्लेश्वरी के गीतों में ज्ञान और भक्ति की एकात्मकता का सुंदर समन्वय है। परमेश्वर प्राप्ति के लिए वह नित्य नामस्मरण, निष्काम कर्मयोग और सदाचार को आवश्यक मानती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अद्वैत दर्शन पर लल्लेश्वरी का दृढ़ विश्वास था। आत्मा और परमात्मा की अभिन्नता का वर्णन करते हुए वह भावविह्ल होकर कहती है – हे प्रभु! तुम मेरे प्राणों के प्राण को, आत्मा की आत्मा हो, हम दोनों में अंतर कहाँ है? हम दोनों एक ही तो है, सदैव अक्षर, सदैव अमर। मुझे और क्या चाहिए प्रभु? मेरी दृष्टि में तो –

'तू ही स्वर्ग तू ही धरती। दिन रजनी और वायु आदि तू।

जन्म लेता है जो वह सब कुछ तू ही।।

सुंदर पुष्पांजलि ही तू ही तू।'

लल्लेश्वरी के दार्शनिक सिद्धान्तों को उनके जीवन में अलग नहीं किया जाता। योगेश्वरी लल्ला अनेक वर्षों तक जीवित रही। जीवन की संध्या बेला में वह श्रीनगर की अग्नेय दिशा में पच्चीस मील पर ब्रजविहार नाम का एक गाँव है वहाँ आ गई और वहाँ की जुम्मा मस्जिद के सामने उसकी आत्मा परमशिव में समा गई। कहा जाता है कि तब उसके शरीर से एक प्राण ज्योति निकली और वह धीरे–धीरे पंचतत्वों में विलीन हो गई। निश्काम कर्मयोगिनी लल्लेश्वरी की एकमात्र प्रार्थना थी–

हेतु छोड़कर करूँगी जो श्रम।

अर्पण होंगे उसके चरणों पर।।

प्रकृति के सान्निध्य में अपना पूरा जीवन व्यतीत करने वाली जन्मना तपस्विनी लल्लेश्वरी भारतीय स्त्री संतों में अग्रण्य है। परम आदरणीय है।

निष्कर्ष :

लल्लेश्वरी भक्ति के ऊँचे सोपान पर पहुँच चुकी थी जिसे सिद्धावस्था कहा जाता है। सब प्रकार के भेद–भाव, सांसारिकता, मान–अपमान, राग–विराग से परे वह आनन्द–स्फुरणों में

स्थित हो बिल्कुल निरपेक्ष को जीती थी। इस अनुभूति को उसने अपने एक वाख में इस प्रकार प्रकट किया है–'इस असार संसार में व्याप्त विविध विभिन्नताओं विसंगतियों को देखती हुई, मेरा मन व्यथित हो उठा है।' एक अन्य वाख में वह कहती है– 'चाहे कोई मेरी कितनी ही उपेक्षा करे, अपमानित करे, मैं कभी उसका बुरा न मानूँगी। जब मेरे इष्ट मेरे शिव का मुझ पर स्नेह है तो लोगों के भला–बुरा कहने से क्या होता है।'

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. भारत की महिला सन्त, पृ0 31
2. वही, पृ0 31
3. वही, पृ0 32
4. सालवेकर, वासंती, अतुल प्रकाशन, कानपुर, 2017,
5. स्वामी घनानन्द, पूर्व और परिचय की सन्त महिलाऐं, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1962, पृ0 56, 59, 102
6. बलदेव वंषी, भारतीय नारी सन्त, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2017, पृ0 138–141